

## भारतीय ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र का विकास



ज्योतिषाचार्य  
तेजस्कर पाण्डेय

भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम आधारों में से एक ज्योतिष और खगोलशास्त्र है, जो न केवल आचार-विचार और धार्मिक अनुष्ठानों का मार्गदर्शन करता रहा है, बल्कि विज्ञान, गणित, भूगोल और दर्शन के क्षेत्रों में भी गहन योगदान देता रहा है। भारतीय ज्योतिष का उद्गम वेदों के काल में हुआ, और इसे वेदांग ज्योतिष के रूप में मान्यता प्राप्त है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में नक्षत्रों, ऋतुओं, सूर्य-चंद्र के गति-क्रम और काल-गणना के अनेक उल्लेख मिलते हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय समाज में समय की गणना और आकाशीय पिंडों के अध्ययन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। विशेष रूप से 'वेदांग ज्योतिष' के रूप में लघु एवं विस्तृत दोनों संस्करण, ऋग्वेदीय और यजुर्वेदीय शाखाओं में उपलब्ध हैं, जिनमें वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष और तिथि की स्पष्ट गणना का वर्णन मिलता है।

भारत में ज्योतिष और खगोलशास्त्र का प्रारंभिक स्वरूप धार्मिक और यज्ञीय आवश्यकताओं से जुड़ा था। यज्ञों के लिए उचित मुहूर्त का चयन, आकाशीय घटनाओं का निरीक्षण और पंचांग निर्माण, प्रारंभिक विद्वानों की मुख्य चिंताओं में से थे। समय के साथ यह ज्ञान और अधिक परिष्कृत हुआ, और गणितीय सूत्रों, त्रिकोणमिति, तथा भौगोलिक मानचित्रण का प्रयोग बढ़ा। वैदिक काल के पश्चात जब उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों का विकास हुआ, तब ज्योतिष केवल अनुष्ठानिक गणना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह ब्रह्मांड के स्वरूप और ग्रह-नक्षत्रों की गति के दार्शनिक चिंतन से भी जुड़ गया।

इसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी के प्रारंभिक शताब्दियों में, भारतीय खगोलशास्त्र ने व्यवस्थित और वैज्ञानिक स्वरूप लेना शुरू किया। इस काल में 'लाघ' जैसे आचार्यों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने 'वेदांग ज्योतिष' का सूत्रपात किया। उनके द्वारा वर्णित सौर और चंद्र वर्ष की गणना, नक्षत्र-क्रम और समय मापन की पद्धति, अपने समय के लिए अत्यंत सटीक थीं। इसके पश्चात मौर्यकाल और गुप्तकाल के बीच ज्योतिष और खगोल विज्ञान का अद्वितीय विकास हुआ। गुप्तकाल को अक्सर भारतीय गणित-खगोल विज्ञान का स्वर्णयुग कहा जाता है, क्योंकि इसी समय आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त जैसे महाविद्वानों का

उदय हुआ। आर्यभट्ट (476-550 ई.) ने अपने 'आर्यभटीय' ग्रंथ में न केवल ग्रह-गति और त्रिकोणमिति के सिद्धांत प्रस्तुत किए, बल्कि पृथ्वी के गोलाकार होने और उसकी अपनी धुरी पर घूमने की वैज्ञानिक व्याख्या भी की। उन्होंने पाई (ध्रुव) का मान 3.1416 तक निकाला, जो अद्भुत गणितीय सटीकता का प्रमाण है। वहीं, वराहमिहिर (505-587 ई.) ने 'बृहत् संहिता' और 'पंच सिद्धांतिका' जैसे ग्रंथों में खगोलशास्त्र, ज्योतिष, मौसम विज्ञान, वास्तु, और प्राकृतिक संकेतों का विस्तृत वर्णन किया। उनकी पंच सिद्धांतिका में पाँच प्रमुख खगोल पद्धतियों—पौलिश, रोमक, वसिष्ठ, सूर्य और पितामह सिद्धांत—का तुलनात्मक विश्लेषण है, जो यह दर्शाता है कि भारतीय विद्वान अन्य सभ्यताओं के ज्ञान से भी संवाद कर रहे थे।

ब्रह्मगुप्त (598-668 ई.) ने 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में ग्रह-गणना, ग्रहण की भविष्यवाणी, और बीजगणितीय समीकरणों का अद्वितीय विकास किया। उन्होंने शून्य और ऋणात्मक संख्याओं के साथ गणना करने के नियम स्पष्ट रूप से बताए, जिसका प्रभाव बाद में अरब और यूरोपीय गणित पर भी पड़ा। उनके द्वारा दी गई



ग्रहण-गणना पद्धति इतनी सटीक थी कि सदियों तक भारतीय पंचांग-निर्माता उसी पर आधारित रहे। मध्यकाल में भी यह परंपरा जीवित रही। भास्कराचार्य (1114-1185 ई.) ने 'सिद्धांत शिरोमणि' और 'लीलावती' में गणित और खगोल विज्ञान को सहज और व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी 'गोलाध्याय' खंड में खगोलीय गोले, देशांतर-अक्षांश, उदय-अस्त, और

ग्रहण की गणना की अद्वितीय व्याख्या है। इसी काल में केरल स्कूल के गणितज्ञ-खगोलशास्त्री जैसे माधव ने त्रिकोणमिति में अनंत श्रेणियों का प्रयोग किया, जो यूरोप में कैल्कुलस के विकास से दो शताब्दी पहले की उपलब्धि थी। भारतीय खगोल विज्ञान का वैश्विक संवाद भी अत्यंत रोचक है। यूनानी, बैबिलोनियाई और बाद में अरब विद्वानों के साथ विचारों का आदान-प्रदान हुआ। गुप्त और बाद के काल में भारत से अरब देशों में खगोल-ग्रंथ अनूदित हुए, जिनसे इस्लामी खगोलशास्त्र समृद्ध हुआ। फिर यही ज्ञान यूरोप में पहुँचा, जिससे पुनर्जागरण कालीन विज्ञान को गति मिली।



### घर में रखे पुराने कपड़े बन सकते हैं दुर्भाग्य का कारण

आपकी अलमारी में ऐसे कई कपड़े रखे होंगे, जिन्हें आपने महीनों या सालों से नहीं पहना होगा। वहीं, कुछ ऐसे भी कपड़े घर में आपने जमा कर रखे होंगे, जो फटे पुराने होंगे। अगर, ऐसा है तो अनजाने में आप अपने घर में निगेटिविटी को न्योता दे रहे हैं, जो आगे चलकर आपके दुर्भाग्य का कारण बन सकता है। दरअसल, ज्योतिष शास्त्र में पुराने कपड़ों का संबंध शनि और राहु से माना जाता है। जिन घरों में पुराने कपड़े होते हैं, वहाँ पर शनि और राहु का अशुभ प्रभाव रहता है। ऐसा होने पर आपकी तरक्की और सुख-समृद्धि में बाधा आ सकती है। इसलिए घर में और अलमारी में उन्हीं कपड़ों को रखें जो पहनने लायक हों और फटे-पुराने नहीं हों। **आइए जानते हैं पुराने कपड़ों का क्या करें-**

- वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर पर फटे, पुराने और बेकार कपड़ों को तुरंत ही अलमारी से बाहर निकाल दें। इन कपड़ों की वजह से आपको आर्थिक और मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।
- वास्तु शास्त्र के अनुसार कभी भी पुराने, बेकार और फटे हुए कपड़ों दान नहीं करने चाहिए। यदि आप किसी जरूरतमंद व्यक्ति को कुछ दान करना चाहते हैं, तो ऐसे कपड़े दें, जो पहनने लायक हों। यदि आपके पास काले कपड़े हों, तो उन्हें शनिवार के दिन दान करने से शनि दोष कम होता है।
- वास्तु शास्त्र के अनुसार, बेरंग हो चुके कपड़े पहनने या उन्हें घर में रखे रहने से आपको जिंदगी भी बेरंगी होने लगती है। इसी तरह दग-धब्बे लगे कपड़े भी घर में नहीं रखने चाहिए। इसलिए इन कपड़ों को भी फेंक दें।

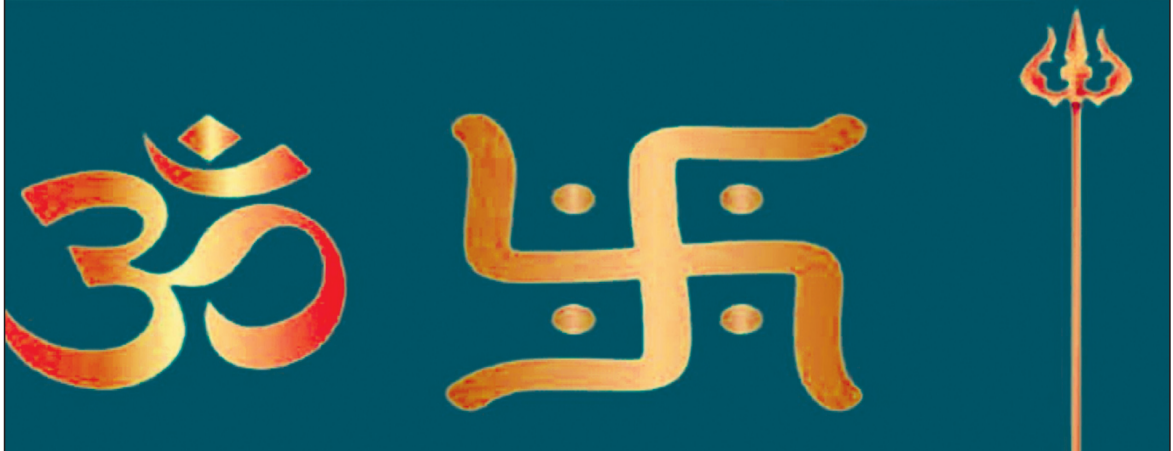
### घर में अचानक कांच टूटना क्यों होता है शुभ?

यह किसी आने वाली मुसीबत के टालने का संकेत कहलाता है



### इन बातों का रखें ध्यान

अगर किसी शुभ अवसर पर कांच या शीशा टूट जाते, तो इसे अपशकुन माना जाता है। टूटे हुए कांच को हटाने का समय सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि किसी को चोट न लगे। लिहाजा, इसे कूड़ेदान में फेंकने से पहले किसी मोटे कपड़े या कागज में लपेट लें। वास्तु के अनुसार, घर में गोल आकार का आईना या धार वाले शीशे का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। यदि आप चौकोर आकार का आईना नहीं लगाया चाहते हैं, तो अष्टकोणीय डिजाइन को चुन सकते हैं। इसके अलावा आईने को कभी भी बेडरूम में नहीं लगाया चाहिए। यदि आपने बेडरूम में इसे लगाया है, तो इस तरह से लगाया चाहिए कि सोते समय आपका प्रतिबिंब इसमें न दिखे। यदि आप किसी ऐसी जगह पर हैं, जहाँ ये बदलाव करना मुमकिन नहीं है, तो उस शीशे पर कपड़ा डाल दें।



### घर में सुख-शांति के लिए लगाएं ये धार्मिक चिह्न

हर कोई चाहता है कि उसके घर में सुख शांति बनी रहे। इसके लिए कई तरह के वास्तु उपायों को अपनाया जाता है। जैसे घर में नमक के पानी से पोछा लगाने से घर की निगेटिविटी दूर होती है। मगर, पॉजिटिविटी की क्या? उसे घर में लाने के लिए और लगातार बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए.

**स्वस्तिक का चिह्न**  
स्वस्तिक को हमेशा शुभ शुरुआत और सफलता का प्रतीक माना गया है। पहले के समय में हर शुभ कार्य से पहले घरों के दरवाजों पर स्वास्तिक का चिह्न बनाया जाता था। आज भी पूजा पाठ से पहले स्वास्तिक का चिह्न बनाया जाता है, घर के मुख्य द्वार पर इसे लगाने से वास्तु दोष दूर होता है और पॉजिटिव एनर्जी बनी रहती है।

**ओम् का चिह्न रखना**  
ओम् को ब्रह्मांड की मूल ध्वनि माना जाता है, जो सृष्टि के प्रारंभ से है और हमेशा रहेगी। यह तीन अक्षर अ, ओ और म से मिलकर बनी है, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। ओम् का जाप, ध्यान और श्रवण आध्यात्मिक विकास और शांति के लिए किया जाता है। ओम् इसका चित्र या शोपीस घर में लगाने से आध्यात्मिक ऊर्जा बढ़ती है।



### कौन-सा पाया लाएगा भाग्य? सोना, चांदी, तांबा या लोहा?

बहुत से लोगों ने अपने घर के बड़े-बुजुर्गों को सोने, चांदी या लोहे के पैर के बारे में बात करते सुना होगा। यहां उनका मतलब पाये से होता है। दरअसल कुंडली के बारह स्थानों को चार पायों में बांटा गया है और इन्हें अलग-अलग नाम दिए गए हैं। जन्म के समय में चंद्रमा कुंडली में जिस स्थान पर होता है उसके अनुसार पाया के बारे में पता लगाया जाता है।

**ऐसे जानें किस पाये में हुआ है आपका जन्म**

**सोना (स्वर्ण पाया)**—जब चंद्रमा पहले, छठे या ग्यारहवें भाव में हो तो व्यक्ति का जन्म सोने के पाये में माना जाता है। श्रेष्ठता में ये पाया तीसरे नंबर पर आता है। कहते हैं इस पाये में जन्मे बच्चों को किसी भी काम में सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती है।

**चांदी (रजत पाया)**—चंद्रमा दूसरे, पांचवें या नौवें भाव में हो तो चांदी के पाये का जन्म माना जाता है। ये सबसे शुभ पाया माना गया है। इस पाये के बच्चे अपने परिवार वालों के लिए बेहद लकी साबित होते हैं। ऐसे बच्चे मेहनती, संतुलित और सामाजिक होते हैं। माता-पिता का खूब नाम रोशन करते हैं। इन्हें जीवन में सबकुछ प्राप्त होता है।

**तांबा (ताम्र पाया)**—जब चंद्रमा तीसरे, सातवें या दसवें स्थान पर हो तो तांबे का पाया होता है। श्रेष्ठता में यह पाया दूसरे नंबर पर आता है। इस पाये में जन्मे बच्चे भी भाग्यशाली होते हैं। ये घर की सुख-समृद्धि में वृद्धि करते हैं।

**लोहा (लोह पाया)**—जब चंद्रमा चौथे, आठवें या बारहवें भाव में होता है तो बच्चे का जन्म लोहे के पाये का होता है। ज्योतिष में इस पाये को अशुभ माना जाता है। कहते हैं इस पाये में जन्मे व्यक्ति को जीवन में अधिक संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन अगर मेहनत में कोई कसर न छोड़ी जाए तो ऐसे लोग सफलता हासिल करने में कामयाब हो जाते हैं।



**साप्ताहिक ग्रहस्थिति**— इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में ता. 17 को 4.23 दिन से सिंह राशि में, मंगल कन्या राशि में, बुध कर्क राशि में, गुरु मिथुन राशि में, शुक मिथुन राशि में ता. 20 को 2/26 रात से कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चंद्रमा वृष मिथुन कर्क और सिंह राशि में संचरण करेगा।

**ग्रहयोगों का प्रभाव**— ता. 17 को सूर्य मघा नक्षत्र सिंह राशि में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से बाजारों में जोदार तेजी के झटके आयेंगे, इन दिनों चांदी, सोना, तिल, पेरेंड, सरसों अन्य सभी तिलहन, दाख, गुड़, खाड़, शकर, हीरा, मिर्च, जवाहरात एवं शेरार बाजारों में जोरदार तेजी से व्यापारी तुरन्त लाभ लें. शीघ्र ही मंदी का रूख बनेगा. ता. 20 को शुक कर्क राशि में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से इन दिनों प्रायः सभ व्यापारिक वस्तुएं तेजी की तरफरहेगी, रुई चांदी में घटबाड़ी के बाद तेजी होगी, मूंफली, सरसों में अच्छी तेजी का लाभ मिलेगा, गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजार, उड़द, मूंग, मोठ चना में अचानक तेजी का झटका आयेगा।

**पूर्व/व्रत/व्योहार:**

रविवार	17 अगस्त को	गोगा नवमी
सोमवार	18 अगस्त को	महाकाल शाही सवारी उज्जैन
मंगलवार	19 अगस्त को	जया/अजा एकादशी व्रत
बुधवार	20 अगस्त को	प्रदोष व्रत
गुरुवार	21 अगस्त को	शिव चतुर्दशी व्रत
शुक्रवार	22 अगस्त को	श्राद्ध अमावस्या
शनिवार	23 अगस्त को	कुशावाटिनी अमावस्या

**मेघ**  
इस सप्ताह कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आपको मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यों को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हासिलप्रद हो सकता है, घरेलू मामलों खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च साहने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सवस्त्रों में रूचि रहेगी।

**वृषभ**  
इस सप्ताह यदि अस्वस्थ हैं, और कमजोरी है, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये स्वस्थ अनुकूल है, अपने कार्य को क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छे है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पड़ेगा, अनुभवों का लाभ होगा।

**मिथुन**  
इस सप्ताह आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जुड़े लोग बेहतर प्रदर्शन करें, सफलता मिलेगी, घरेलू आयोजन आनन्दमय रहेगा, आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षा बढ़ेगी।

**कर्क**  
इस सप्ताह अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरुआत ठीक रहेगी, पुकन्या गलती को भूलकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करें, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी।

**सिंह**  
इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीद सकते हैं, अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले विचार अवश्य करना चाहिये।

**कन्या**  
इस सप्ताह प्रायः के बारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरुआत कर सकते हैं, अपने व्यवहार और आत्म विश्वास का प्रयोग कार्यक्षेत्र में करेंगे, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा सकते हैं, सप्ताह के शुरुआत में आप भ्रमण की स्थिति में रहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे, वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे।

**तुला**  
इस सप्ताह आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानवाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस् में आपके खूले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा। अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेरार में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अफेरेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है।

**वृश्चिक**  
इस सप्ताह आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा, आस पड़ोस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार में विस्तार की संभावना बरती है, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग रहेगा।

**धनु**  
इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा, आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, अपनी उदारता पर अंकुश रखा तो राहत मिलेगी, कार्यक्षेत्र प्रभावित होगा, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी।

**मकर**  
इस सप्ताह परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि वह प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे, परिश्रम अधिक करना होगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे।

**कुम्भ**  
इस सप्ताह आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पत्र प्रेषिता प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना होगा, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**मीन**  
इस सप्ताह पहले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यों में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफलता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना होगा, जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी, भावनात्मक संबंधों में निकटता आवेगी, प्रायः टी से अच्छा लाभ मिलेगा।